IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 7.105 ⁜ Vol. 9, Issue 4, April 2022

DOI: 10.17148/IARJSET.2022.9465

केदारनाथ सिंह की कविता और बिंब-विधान

तनु शर्मा*

संजना देवी**

रुपा***

सारांश

बिंब-विधान का संबंध आधुनिक साहित्य से है। बिंब शब्द पाश्चात्य साहित्य की देन है और अंग्रेजी भाषा के 'इमेन' शब्द का हिन्दी रुपांतर है। बिंब शिल्पपक्ष का महत्वपूर्ण अंग है। काव्य का सौंदर्य बढ़ाने में बिंब की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस संबंध में उनका विचार है कि ''कविता में मैं सबसे अधिक ध्यान देता हूँ, बिंब-विधान पर। बिंब-विधान का संबंध जितना काव्य की विषय-वस्तु से होता है, उतना ही उसके रुप से भी। विषय को वह मूर्त और ग्राह्य बनाता है, रुप को संक्षिप्त और दीप्त।''[1] बिंब की निर्माण प्रक्रिया में चित्रों, प्रतीकों, रुपकों आदि की सहायता आवश्यक है।

मूल्य शब्दः ग्रामीण जीवन का यथार्थ, बिंब, किसान और मजदूर का यथार्थ, स्पर्श बिंब।

*व्याख्याता, जी.डी.सी. मढ़, जम्मू।

**व्याख्याता, जी.डी.सी. मढ़, जम्मू।

***शिक्षण सहायक, जी.डी.सी. मढ़, जम्मू।

© IARJSET This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 7.105 ⁜ Vol. 9, Issue 4, April 2022

DOI: 10.17148/IARJSET.2022.9465

2

प्रस्तावना

केदारनाथ सिंह की कविताओं में सामाजिक यथार्थ बिंब के माध्यम से बड़े सुंदर और कलात्मक रुप में चित्रित हुआ है। उनका लोकजीवन से गहरा एवं आत्मीय लगाव रहा है। वे अपने इस आत्मीय संबंध के बिंबों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। इसलिए उनकी कविताओं में बार-बार 'हल्दी' का बिंब दिखायी देता है। 'जल-हँसी' नामक कविता में हँसी का बिंब 'हल्दी' के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए कवि कहता है-

''हल्दी के पानी-सी
हँसी वह फैल गई
दूर-दूर लहरों में
लहरों की भीतरी गुफाओं-कंदराओं में
गूजती चली गयी।''[२]

राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार कवि को दुखी करता है। कवि केदारनाथ सिंह 'भेडिये' के बिंब के द्वारा बड़े कलात्मक ढंग से इसे 'चुनाव की पूर्व संध्या पर' नामक कविता में प्रस्तुत करते हैं-

''भेडिये से फिर कहा गया है
अपने जबड़ों को खुला रखे
यह सारा देश
उसमें झाँककर देखना चाहता है
अपना चेहरा
अपनी आँखे
अपना ललाट।''[३]

केदारनाथ सिंह भेडिये के माध्यम से लोकतंत्र की चुनाव-प्रक्रिया का ताना-बाना बुनते है। वे राजनीतिक व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्ठ नीतियों का पर्दाफाश करते हैं।

केदारनाथ सिंह अपने काव्य के माध्यम से भाव-संवेद्य बिंबों को सुंदर रुप में प्रस्तुत करते हैं। वे 'माझी का पुल' नामक कविता में महत्वपूर्ण एवं

IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 7.105 ⁜ Vol. 9, Issue 4, April 2022

DOI: 10.17148/IARJSET.2022.9465

प्रभावशाली बिंब का दर्शन कराते हैं। लालमोहर को तम्बाकू खाने की आदत है। खेत जोतते समय उसके उसे तम्बाकू का सेवन करने की ज़रुरत महसूस होती है, ठीक उसी समय लालमोहर को बैलों के सींग के बीच में लाल-लाल दहकता हुआ 'माँझी का पुल' दिखायी देता है। ऐसा इसलिए होता है कि उसकी दिनचर्या में पुल को विशेष महत्व प्राप्त है। उसके जीवन सौंदर्य और जरुरतों से 'माँझी का पुल' जुड़ा हुआ है, जिसे कवि ने इस प्रकार से अभिव्यक्त किया है-

''लालमोहर हल चलाता है
और ऐसी उसी वक्त
जब उसे खैनी की जरुरत महसूस होती है
बैलों के सींगों के बीच से दिख जाता है
माँझी का पुल।''[4]

कवि सामाजिक यथार्थ का चित्रण करते हुए समयानुसार अपने काव्य सृजन में बदलाव करता हुआ दिखायी देता है। कवि जनसाधारण से जुड़ा हुआ है। जमीनी बात करता है। इसलिए उसे वह ऊँचाई पसंद नहीं, जिसमें आम जनता का कोई सरोकार न हो। इस बात की पुष्टि वह बिंबों के माध्यम से करता है, जिसे 'ऊँचाई' नामक कविता में देखा जा सकता है-

''मेरे शहर के लोगों
यह कितना भयानक है
कि शहर की सारी सीढ़ियाँ मिलकर
जिस महान ऊँचाई तक जाती हैं
वहाँ कोई नहीं रहता।''[5]

प्रस्तुत पंक्तियों में 'ऊँचाई' शब्द का व्यंगात्मक प्रयोग किया गया है क्योंकि 'ऊँचाई' यहाँ एकाकीपन का बिंब प्रस्तुत करता है।

कवि जहाँ जाता है, जिस मोड़ पर पहुँचता है, वहाँ उसे साधारण मनुष्य मिल ही जाता है। इसे साधारण मनुष्य के प्रति लगाव कह सकते हैं। 'कस्बे की धूल' नामक कवितर में वह साधारण जनता की दिनचर्या की बात करता है। ऐसा करते हुए वह 'धूल' नामक शब्द को बिंब का माध्यम बनाता है।

© IARJSET This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 7.105 ⁜ Vol. 9, Issue 4, April 2022

DOI: 10.17148/IARJSET.2022.9465

4

कवि का आत्मविश्वास जनसाधारण के साथ है। इसलिए वह उसे मनुष्य की कल्पना से जोड़ने का प्रयास करते हैं-

''सच्चाई यह है कि इस सारे माहौल में
सिर्फ यह धूल है
सिर्फ इस धूल का लगातार उड़ना
जो मेरे यकीन को अब भी बचाये हुए हैं
नमक में
और पानी में
और पृथ्वी के भविष्य में
और दन्तकथाओं में।''[6]

केदारनाथ सिंह आम आदमी की तुलना आम वस्तुओं से करते हैं। नमक, पानी दोनों ही बहुत मूल्यवान वस्तु हैं। दोनों की अनुपस्थिति में या दोनों के कम या अधिक हो जाने से वस्तुओं में स्वाद बदल जाता है। अर्थात् उथल-पुथल का माहौल बन जाता है, उसी प्रकार साधारण मानव भी है, उसकी कमी या अधिकता भी समाज को अस्थिर कर देती है।

'बाघ' नामक काव्य में अधिकांशतः स्पर्श एवं दृश्य बिंबों को देखा जा सकता है। वह अपने इस काव्य के पहले ही खण्ड में स्पर्श बिंब का बड़ा मनोरम चित्रण करता है। हाथ और होंठ के द्वारा कवि ने सार्थक बिंब प्रस्तुत किया है जो इस प्रकार है-

''यह लो मेरा हाथ
इसे तुम्हें देता हूँ
और अपने पास रखता हूँ
अपने होठों की
थरथराहट.....
एक कवि को
और क्या चाहिए।''[7]

कवि व्यक्ति को निरंतर संघर्षशील देखना चाहता है। जोखिम उठाना

IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 7.105 ⁜ Vol. 9, Issue 4, April 2022

DOI: 10.17148/IARJSET.2022.9465

और चुनौतियों का सामना करना जैसी प्रवृति ईश्वर ने सभी प्राणियों के भीतर उत्पन्न की है। इसलिए कवि संघर्षशील मानव समाज का बिंब प्रस्तुत करने के लिए चिड़िया के उस हौंसले का चित्रण किया है जो निरंतर नया घोंसला बनाने में संघर्षरत रहती है। औद्योगीकरण, बाजारवाद ने सर्वाधिक प्रकृति का दोहन किया है, जिसे कवि ने 'घोंसलों का इतिहास' नामक कविता में बिंबों के माध्यम से प्रस्तुत करता है-

''सच यह है कि बाज़ार में मिलते नहीं घोंसलें
वहाँ सिर्फ पिंजड़े मिलते हैं
इसलिए टूट जाने के बाद उन्हें हर बार बनाना पड़ता है नए सिरे से
उतने ही धीरज
और शायद उससे भी ज्यादा जोख़िम के साथ।''[8]

केदारनाथ सिंह ग्रामीण जीवन मे व्याप्त अंधविश्वास का अपनी कविता के माध्यम से खण्डन करते हैं। लोगों का अंधविश्वास ही वस्तुओं को सत्यतता प्रदान करता है। परंतु समयानुसार लोगों के भीतर जागरुकता उत्पन्न हो रही है। कवि 'भुतहा बाग' नामक कविता में व्यंगात्मक बिंब इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं-

''उनका अनुमान था
कुछ भूत बह गए सन् सरसठ की बाढ़ में
कुछ उड़ गए जेठ की पीली आँधी में
जो बच गए चले गए शायद
किसी शहर की ओर
धन्धे की तलाश में।''[9]

केदारनाथ सिंह का बचपन से ही प्रकृति के प्रति लगाव रहा है। इसलिए वे प्रकृति को नष्ट होता नहीं देख सकते। प्रकृति का दोहन समाज को नष्ट कर देगा। वह चाहते हैं कि प्रकृति बची रहे और उससे संबंधित समस्त पदार्थ भी जीवित रहें। लेकिन राजनीतिक उथल-पुथल के कारण प्रकृति का सर्वाधिक दोहन होता चला आ रहा है। कवि ने इस बात का उल्लेख 'मंच और मचान' नामक कविता में किया है। कवि बिंबो के माध्यम से सत्तापक्ष

© IARJSET This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 7.105 ⁜ Vol. 9, Issue 4, April 2022

DOI: 10.17148/IARJSET.2022.9465

के अंधेपन और स्वार्थलिप्तता का खण्डन करता है। सरकार इस बात से अनभिज्ञ है कि जो वृक्ष काटा जा रहा है, उससे लोगों की कितनी आस्थाएँ एवं आवश्यकताएँ जुड़ी हुई हैं। उस वृक्ष के ऊपर भिक्खूबाबा, कीड़े-मकोडे, पशु-पक्षी आदि रहते हैं। वृक्ष के नष्ट होते ही इन समस्त जीवित प्राणियों का घर भी नष्ट हाक जाएगा; जिसे कवि ने बिंबों के माध्यम से प्रस्तुत किया है-

"कि अचानक
जडों के भीतर एक कड़क की हुई
और लोागों ने देखा कि चीख न पुकार
बस झूमता-झामता एक शाहना अन्दाज में
अरअराकर गिर पड़ा समूचा बरगद
सिर्फ 'घर' - वह शब्द
देर तक उसी तरह
टँगा हवा में।"[10]

कवि केदारनाथ सिंह अपनी कविता के माध्यम से किसान मजदूर, स्त्री आदि के संघर्षरत जीवन का यथार्थ चित्रण करते हैं। उनके संघर्षरत जीवन को बिंबों के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। सूखते हुए वृक्ष के ऊपर तीन-चार हरे पत्तों का होना इस बात का प्रमाण है कि जीवित रहने के लिए संघर्ष करते रहना चाहिए। ये सर्वहारा वर्ग के लोग अपनी मेहनत से समाज को सुखदायक एवं आनंदमय बनाते हैं। लेकिन स्वयं का जीवन कष्टों में व्यतीत करते हैं। कवि 'सृष्टि पर पहरा' नामक कविता में दृश्य बिंब को इस प्रकार प्रस्तृत करता है-

"कितना भव्य था
एक सूखते हुए वृक्ष की फुनगी पर
महज़ तीन-चार पत्तों का हिलना
उस विकट सुखाड़ में
सृष्टि पर पहरा दे रहे थे
तीन-चार पत्ते।"[11]

© IARJSET This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 7.105 ⁜ Vol. 9, Issue 4, April 2022

DOI: 10.17148/IARJSET.2022.9465

निष्कर्ष

निष्कर्ष रुप में यह कहा जा सकता है कि केदारनाथ सिंह के काव्य में बिंब की कलात्मक योजना दिखायी देती है। उनके द्वारा प्रयुक्त बिंब, सामाजिक यथार्थ के विविध पहलुओं को उजागर करते हैं। वे बिंबों के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, ग्रामीण जीवन का यथार्थ, किसान और मजदूर का यथार्थ, स्त्री के संघर्षशील जीवन का यथार्थ चित्रण करते हैं। उनकी कविता बिंबों के द्वारा ही विस्तार पाती है।

संदर्भ-सूची

1. अज्ञेय : तीसरा सप्तक, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, दसवाँ संस्करण- 2013, पृ.122
2. सिंह केदारनाथ : अभी बिल्कुल अभी, संभावना प्रकाशन, हापुड, दूसरा संस्करण- 1980, पृ.47
3. सिंह केदारनाथ : अभी बिल्कुल अभी, संभावना प्रकाशन, हापुड, दूसरा संस्करण- 1980, पृ.87
4. सिंह केदारनाथ : जमीन पक रही है, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, पंचम संस्करण- 2012, पृ.95
5. सिंह केदारनाथ : यहाँ से देखो, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पाँचवी आवृत्ति- 2013, पृ.58
6. सिंह केदारनाथ : यहाँ से देखो, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पाँचवी आवृत्ति- 2013, पृ.29
7. सिंह केदारनाथ : बाघ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम वाणी संस्करण- 2009, पृ.10
8. सिंह केदारनाथ : तालस्ताय और साइकिल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहली आवृत्ति- 2010, पृ.23
9. सिंह केदारनाथ : तालस्ताय और साइकिल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहली आवृत्ति- 2010, पृ.119
10. सिंह केदारनाथ : सृष्टि पर पहरा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2014, पृ.44, 45
11. सिंह केदारनाथ : सृष्टि पर पहरा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2014, पृ.62

© IARJSET This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License